आज का पुरुषार्थ by Suraj Bhai

Date: 14 March 2022 **Website**: www.shivbabas.org

धारणा – *अब इस संसार से, माया के आकर्षणों से मुक्त होने का पुरुषार्थ करे ... मेहमान की तरह लगाव मुक्त बन जाये "*

यह संसार एक सुन्दर खेल है। हम सभी इसमें खिलाड़ी भी है, साथ में मेहमान भी है। हम मेहमान बनकर ही इस विश्व के स्टेज पर परमधाम से आये है। और हमें यहाँ से वापिस अपने घर चले जाना है।

हम मेहमान है। मेहमानों में जब दुसरे के घर जाते है आसक्ति नहीं होती। वहाँ कोई अच्छी चीजें देखते तो वह यह नहीं सोचते कि हम इन्हें उठाकर साथ ले चले।

हम सब इस संसार में मेहमान है। माया ने हमारे चारों ओर आकर्षण की वस्तुयें रख दी है। कहीं देहधारियों का आकर्षण है, कहीं सांसारिक पदार्थों का आकर्षण है। कहीं अथाह धन-सम्पदा का आकर्षण है, कहीं बहुत सारी **सुख-सुविधा** की सामग्री रखने की आकर्षण है।

परन्तु जिन्हें योग का रस प्राप्त करना हो, जिन्हें श्रेष्ठ योगी बनना हो, जिन्हें संसार को बहुत बड़ा योग का सहयोग देना हो, या जिन्हें अपने स्प्रीचुयाल लेवल को बहुत ऊँचा उठा देना हो उन्हें इस संसार की इस माया में इन आकर्षणों में अटकने की आवश्यकता नहीं है।

भले ही यह बड़े ही लुभावने है, यह बड़े प्रिय लगते है, दुसरों के घरों में हम बहुत सारी चीजें देखते है तो हमें भी उसके लिए आकर्षण होता है।

परन्तु माना इन सब चीजों की आवश्यकता है, इनसे शोभा भी बढ़ता है। परन्तु अब समय की मांग तो केवल यही है कि, हम केवल एक से सबकुछ प्राप्त करे। और **सभी रसों से स्वयं को मुक्त कर दे।**

क्योंकि जब तक हम कर्मेन्द्रियों की रसों से मुक्त नहीं होंगे, जब तक हम इन आकर्षणों से मुक्त नहीं होंगे, हमें सम्पूर्ण ईश्वरीय सुख, ईश्वरीय रस, उनसे सम्बन्ध निभाने का सुख मिल नहीं सकेगा।

वो हमें सम्पूर्ण सुख देने आया है। हमारा बनकर आया है। सोचो भगवान स्वयं सम्मुख बैठकर कहते है ....

" बच्चे, मैं तुम्हारा हूँ .. तुम मेरे हो "

कितनी बड़ी बात है। हम तो केवल उनके दर्शनों के प्यासे थे। हम तो क्षणभर के लिए उन्हें देखना चाहते थे।

परन्तु वो जब हमारे सामने आया, तो उसने हमें फीलिंग दी ....

"मैं तुम्हारा हूँ "

प्यार के सागर ने अपना प्यार हम पर वर्सा कर कहा ....

" देख लो बच्चे .. **मैं कैसे प्यार का सागर हूँ .. मैं सबसे प्यार करता हूँ .. आनकन्डिशनाल प्यार हूँ** .. मेरा प्यार निर्मल है .. निष्काम, निःस्वार्थ है "

तो हम सभी, अब सभी **आकर्षणों से स्वयं को मुक्त करे।** क्योंकि यह सभी चीजें समाप्त होने वाली है। कुछ भी इनमें अविनाशी नहीं है।

यह ठीक है यह थोड़े समय का सुख देगा, परन्तु अगर हम उसमें आसक्त हो गये, अगर हम उसे यूज़ करके उसके ही हो गये, उसके संकल्पों में ही समय बिताने लगे, तो हम योग का परम सुख नहीं ले पायेंगे।

मान लो किसी के पास बहुत सुन्दर कार है, उसमें बैठकर वो आनन्द पाता है, उसमें सफ़र करता है। यहाँ तक तो ठीक है। लेकिन उसमें आसक्त हो जाना, मेरी कार ... , उसमें ही बुद्धि लगे रहना, यह ग़लत होगा।

मान लो किसी को विशेष तरह का **भोजन** बहुत अच्छा लगता है। उसको बनाने में, उसको खाने में, उसको तैयार करने में ही समय बीता देना ... तो यह **संगमयुग का अनमोल समय** यूँही बीत जायेगा।

तो आईये हम अपने बुद्धि को चारों ओर से डिटैच करे ... हमें महान कार्य करना है। जिन वस्तुओं को हमें छोड़कर जाना है, उनसे अनासक्त हो जाये। यूज़ करे, पर अनासक्त भाव से यूज़ करे। तो वह चीजें हमें बांधेंगे नहीं। हमें सुख प्रदान करती रहेगी। और ईश्वरीय मार्ग में हमारी सहयोगी भी बनी रहेगी।

तो आज सारा दिन इस स्वमान का अभ्यास करेंगे ...

" इस विश्व ड्रामा में मैं हीरो एक्टर हूँ .. और इस संसार में मेहमान हूँ "

अपने को देखे ...

" **मैं आत्मा तो परमधाम से आई हूँ इस देह में** .. भ्रकुटी की कुटिया में बैठकर आखों के द्वारा इस संसार को निहार रही हूँ .. मैं तो इस देह में गेस्ट हूँ .. **बाबा इस धरा पर आये** .. और मुझे भी साथ लेकर आये है "

आज इसको फीलिंग करेंगे ....

" बाबा के साथ मैं भी हूँ .. उसकी शक्तियाँ मेरे साथ है "

।। ओम शान्ति ।।

BK Google: www.bkgoogle.org

Website: www.shivbabas.org